OM-8- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/06/2021 11:25 AM Page 8

परमात्म ऊर्जा

मनमनाभव से आती परमात्म शक्ति

कोई-न-कोई बात जीवन में आकर समस्या बनेगी यह कलियुग का ऐसा समय है, खासतौर से यह जो अन्तिम समय है इसमें किसी का बच्चा, किसी का शरीर, कोई की अपनी परिस्थिति, सरकार का कोई कानून, बिजनेस में कोई ऊंच-नीच, कोई-न-कोई बात असन्तुष्ट करती है। बाबा कहते हैं कि ड्रामा की ढाल को याद रखो, बस। पहले ज़माने में युद्ध करने जाते थे तब सैनिक कवच, तलवार और ढाल ले जाते थे। सामने वाले शत्रु की तलवार के प्रहार से अपने को बचाने के लिए ढाल का इस्तेमाल करते थे। अगर कवच और ढाल नहीं होगा तो शत्रु की तलवार लगेगी और जख्मी हो जायेगा। खासकर, इस पुरुषार्थी जीवन में हम घायल न हों, दुःखी न हों, वार से बचने का तरीका है कवच और ढाल।

साकार में बाबा का जिस समय कहना होता था 'वाह ड्रामा वाह', चेहरा देखने जैसा होता था। जब व्यक्ति असन्तुष्ट होता है, उसको कोई ढाल, कोई कवच, कोई अपनी रक्षा का साधन चाहिए और वो है ड्रामा।

ईश्वरीय लॉ है जिससे संसार बदला जा सकता है इसलिये परमात्मा कहते हैं कि मुझे याद करो, मुझे याद करो। स्मृति का स्थिति से बहुत गहरा सम्बन्ध है। अगर आप दुःख देने वाले व्यक्ति को याद करते हो तो आपके मन में अशांति और घृणा पैदा होगी लेकिन परमात्मा को याद करेंगे तो मन पवित्र, शीतल, शांत, खुश, शक्तिशाली हो जाता है, मन से भेदभाव, नफरत मिट जाते हैं और बदले में प्रेम और सुख भर जाता है। जितना उन्हें याद करेंगे उतनी स्थिति ऊँची और श्रेष्ठ होती जाएगी।

मन जो इतनी बड़ी और वन्डरफुल शक्ति है लेकिन अभी उसमे इच्छाएं, तृष्णायें, कामनाएं, अपेक्षाएं, अनुमान भर गए हैं, उसे परिवर्तन करने के लिए, उसको सुधारने के लिए, उसकी कृषि करने के लिए परमात्मा कहते हैं मन को मेरे में लगाओ, मनमनाभव हो जाओ।

अब भी आपको हलचल तो नहीं होती!

क्या सभी उन्नति की ओर बढ़ते जा रहे हो? चढ़ती कला की निशानी क्या है, क्या वह जानते हो? सदा लगन में मग्न और विघ्न विनाशक यह दोनों निशानियाँ क्या अनुभव में आ रही हैं? या विघ्नों को देख विघ्न विनाशक बनने के बजाय, अपनी स्टेज से नीचे तो नहीं आते हो? क्या अनेक प्रकार के आये हुए तूफान आपकी बुद्धि में तूफान तो पैदा नहीं करते हैं?

जैसे कोई के द्वारा तोहफा मिलता है तो बुद्धि में हलचल नहीं होती है बल्कि उल्लास होता है। इसी प्रकार आये हुए तूफान उल्लास बढ़ाते हैं या हलचल बढ़ाते हैं? अगर तूफान को तूफान समझा तो हलचल होगी और तोहफा समझा व अनुभव किया तो उससे उल्लास और हिम्मत अधिक बढ़ेगी। यह है चढ़ती कला की निशानी। घबराने के बजाय गहराई में जाकर अनुभव के नये-नये रत्न इन परीक्षाओं के सागर से प्राप्त करेंगे तो क्या ऐसे अनुभव करते हो? यह क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है और ऐसे कैसे चलेगा? यह जो संकल्प चलते हैं इसको हलचल कहा जाता है। हलचल के अन्दर रत्न समाये हुए हैं। ऊपर-ऊपर से अर्थात् बहिंमुखता की दृष्टि और बुद्धि द्वारा देखने से हलचल दिखाई देगी अथवा अनुभव होगी। लेकिन आई हुई उन बातों को अन्तर्मुखी दृष्टि व बुद्धि से देखने से अनेक प्रकार के ज्ञान-रत्न अर्थात् प्वाइंट्स प्राप्त होंगे।

अगर कोई भी बात को देखते या सुनते हुए आश्चर्य अनुभव होता है तो यह फाइनल स्टेज नहीं है। ऐसा तो होना नहीं चाहिए, अच्छा जो हुआ वह होना चाहिए, अगर ऐसा संकल्प ड्रामा के होने पर भी उत्पन्न होता है तो इसको भी अंश मात्र की हलचल का रूप कहेंगे। अब तक यह क्यों-क्या का क्वेश्चन का अर्थ है- हलचल। विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना आवश्यक है अगर उतना यह बुद्धि में रहेगा तो उतना ही ऐसा महारथी हर्षित रहेगा। नथिंग न्यू यह है फाइनल स्टेज। यदि कोई भी हलचल का कर्त्तव्य करते हो व पार्ट बजाते हो तो सागर समान ऊपर से हलचल भले ही दिखाई दे रही हो अर्थात् चाहे कर्मेन्द्रियों की हलचल में आ रहे हों लेकिन स्थिति नथिंग न्यू की हो। एकाग्र, एकरस, एकान्त अर्थात् एक रचयिता और रचना के अन्त को जानने वाले। त्रिकालदर्शी की स्टेज पर, क्या आराम से शान्ति की स्टेज पर स्थित हैं, या कर्मेन्द्रियों की हलचल आन्तरिक स्टेज को भी हिलाती है? जब स्थूल सागर दोनों ही रूप दिखाता है तो क्या मास्टर ज्ञान सागर ऐसा रूप नहीं दिखा सकते? यह प्रकृति ने पुरुष से कॉपी की है। आप तो पुरुषोत्तम हो। जो प्रकृति अपनी क्वॉलिफिकेशन दिखा सकती है, क्या वह पुरुषोत्तम नहीं दिखा सकते?

कथा सरिता

एक बार एक राजा था। वह बहुत आलसी था। वह शायद ही अपने हाथ से कोई काम करता था। इसका नतीजा यह हुआ कि वह बीमार रहने लगा। उसने राजवैद्य को बुलाया और कहा, "मुझे स्वस्थ रहने के लिए दवा दो। अगर तुमने मेरा इलाज नहीं किया, तो मैं तुम्हारी हत्या करवा दूंगा।" राजवैद्य यह बात जानता था कि राजा की बीमारी की वजह उसका आलस ही है।

अगले दिन, राजवैद्य ने राजा को बड़े-बड़े डम्बल देकर कहा, "महाराज! आपको इन जादुई गेंदों को हाथ में लेकर सुबह-शाम, दोनों समय आधे घंटे तक झुलाना है। और ऐसा तब तक करना है, जब तक आपकी बांहों से पसीना न आ जाए। इस तरह आप स्वस्थ हो जाएंगे।" राजा ने ऐसा रोज़ किया। राजा को यह पता नहीं था कि यह एक व्यायाम है। कुछ सप्ताह के अंदर ही राजा ठीक हो गया।

अब राजा को काफी चुस्ती व फुर्ती महसूस हो रही थी। उसने राजवैद्य को धन्यवाद दिया और उनसे इलाज का रहस्य पूछा। राजवैद्य ने बड़ी बुद्धिमानी से उत्तर दिया, "महाराज! जब तक आप इन गेंदों को हिलाते रहेंगे, तब तक इस इलाज का जादू आपको ठीक रखेगा। जिस दिन आपने ऐसा करना बंद कर दिया, उस दिन से आप फिर से बीमार हो जाएंगे।" राजवैद्य ने राजा को स्वस्थ रहना सिखा दिया था।

शिक्षा : स्वस्थ रहने के लिए आलस को छोड़ना ज़रूरी है।

स्नेह के आँसू

गली से गुजरते हुए सब्जी वाले ने तीसरी मंजिल की घंटी का बटन दबाया। ऊपर से बालकनी का दरवाजा खोलकर बाहर आई महिला ने नीचे देखा। "बीबी जी! सब्जी ले लो। बताओ क्या-क्या तोलना है। कई दिनों से आपने सब्जी नहीं खरीदी मुझसे, कोई और देकर जा रहा है क्या?" सब्जी वाले ने चिल्लाकर कहा।

"रुको भैया! मैं नीचे आती हूँ।"

उसके बाद महिला घर से नीचे उतर कर आई और सब्जी वाले के पास आकर बोली - "भैया! तुम हमारी घंटी मत बजाया करो। हमें सब्जी की ज़रूरत नहीं है।"

"कैसी बात कर रही हैं बीबी जी! सब्जी खाना तो सेहत के लिए बहुत ज़रूरी होता है। किसी और से लेती हो क्या सब्जी?" सब्जी वाले ने कहा।

"नहीं भैया! उनके पास अब कोई काम नहीं है और किसी तरह से हम लोग अपने आप को जिंदा रखे हुए हैं। जब सब ठीक होने लग जाएगा, घर में कुछ पैसे आएंगे, तो तुमसे ही सब्जी लिया करूंगी। मैं किसी और से सब्जी नहीं खरीदती हूँ। आप घंटी बजाते हो तो उन्हें बहुत बुरा लगता है, उन्हें अपनी मजबूरी पर गुस्सा आने लगता है। इसलिए भैया अब आप हमारी घंटी मत बजाया करो।" महिला कहकर अपने घर में वापिस जाने लगी।

"ओ बहन जी! तनिक रूक जाओ। हम इतने बरस से आपको सब्जी दे रहे हैं। जब आपके अच्छे दिन थे, तब आपने हमसे खूब सब्जी और फल लिए थे। अब अगर थोड़ी-सी परेशानी आ गई है तो क्या हम आपको ऐसे ही छोड़ देंगे? सब्जी वाले हैं, कोई नेता जी तो हैं नहीं कि वादा करके छोड़ दें। रूके रहो दो मिनट।"

और सब्जी वाले ने एक थैली के अंदर टमाटर, आलू, प्याज, घीया, कद्दू और करेले डालने के बाद धनिया और मिर्च भी उसमें डाल दिया। महिला हैरान थी। उसने तुरंत कहा - "भैया! आप मुझे उधार सब्जी दे रहे हो, कम से कम तोल तो लेते, और मुझे पैसे भी बता दो। मैं आपका हिसाब लिख लूँगी। जब सब ठीक हो जाएगा तो आपको आपके पैसे वापस कर दूंगी।" महिला ने कहा।

"वाह! ये क्या बात हुई भला? तोला तो इसलिए नहीं है कि कोई मामा अपने भांजी-भांजे से पैसे नहीं लेता है। और बहन में कोई एहसान भी नहीं कर रहा हूँ। ये सब तो यहीं से कमाया है, इसमें आपका हिस्सा भी है। गुड़िया के लिए ये आम रख रहा हूँ, और भांजे के लिए मौसमी। बच्चों का खूब ख्याल रखना। और आखिरी बात सुन लो, घंटी तो मैं जब भी आऊंगा, ज़रूर बजाउंगा।" और सब्जी वाले ने मुस्कुराते हुए दोनों थैलियां महिला के हाथ में थमा दीं।

अब महिला की आँखें मजबूरी की जगह स्नेह के आँसुओं से भरी हुई थीं।

सारांश : कहीं और न जाकर अपने आस-पास के लोगों की सेवा यदि प्रत्येक व्यक्ति कर ले तो यह मुश्किल घड़ी भी आसानी से गुजर जाएगी और रिश्ते भी मजबूत होंगे।

गौरैया का घोंसला

श्री टी. एन. शेषन जब मुख्य चुनाव आयुक्त थे, तो परिवार के साथ छुट्टियाँ बिताने के लिए मसूरी जा रहे थे। परिवार के साथ उत्तर प्रदेश से निकलते हुए रास्ते में उन्होंने देखा कि पेड़ों पर गौरैया के कई सुन्दर घोंसले बने हुए हैं।

यह देखते ही उनकी पत्नी ने अपने घर की दीवारों को सजाने के लिए गौरैया के दो घोंसले लेने की इच्छा व्यक्त की। तो उनके साथ चल रहे, पुलिस कर्मियों ने तुरंत एक छोटे से लड़के को बुलाया, जो वहां मवेशियों को चरा रहा था, उसे पेड़ों से तोड़ कर दो गौरैया के घोंसले लाने के लिए कहा। लड़के ने इंकार में सर हिला दिया।

श्री शेषन ने इसके लिए लड़के को 10 रूपये देने की पेशकश की। फिर भी लड़के के इनकार करने पर श्री शेषन ने बढ़ा कर रूपये 50 देने की पेशकश की। फिर भी लड़के ने हामी नहीं भरी। पुलिस ने तब लड़के को धमकी दी और उसे बताया कि साहब जज हैं और तुझे जेल में भी डलवा सकते हैं। गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

लड़का तब श्रीमती और श्री शेषन के पास गया और कहा, "साहब, मैं ऐसा नहीं कर सकता। उन

घोंसलों में गौरैया के छोटे बच्चे हैं अगर मैं आपको घोंसले दूं, तो जो गौरैया अपने बच्चों के लिए भोजन की तलाश में बाहर गई हुई है, जब वह वापस आएगी और बच्चों को नहीं देखेगी तो बहुत दुःखी होगी जिसका पाप मैं नहीं ले सकता।" यह सुनकर श्री टी.एन. शेषन दंग रह गए।

श्री शेषन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है - "मेरी स्थिति, शक्ति और आई.ए.एस. की डिग्री सिर्फ उस छोटे, अनपढ़, मवेशी चराने वाले लड़के द्वारा बोले गए शब्दों के सामने पिछड़ गई। "पत्नी द्वारा घोंसले की इच्छा करने और घर लौटने के बाद, मुझे उस घटना के कारण अपराध बोध की गहरी भावना का सामना करना पड़ा।"

ज़रूरी नहीं कि शिक्षा और महंगे कपड़े मानवता की शिक्षा दे ही दें। यह आवश्यक नहीं है, यह तो भीतर के संस्कारों से पनपती है।